यह है कि इनके आधार निश्चित या कारक क्या हैं? किस प्रकार व्यक्ति अपने स्व का प्रत्यक्षीकरण करता है। किन आधारों पर अपने प्रति कोई धारणा बनाता है। कौन से कारक उसे आत्म-मूल्यांकन में सहायक होते हैं। इन समस्याओं के समाधान के संबंध में निम्नलिखित सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं—

(1) <u>सामाजिक तुलना-सिद्धांत (Social comparision theory)</u> :→

मूलतः इस सिद्धांत का प्रतिपादन फेस्टिंगर ने किया। व्यक्ति के स्व-प्रत्यक्षीकरण या आत्म-मूल्यांकन का आधार भौतिक वास्तविकता तथा सामाजिक वास्तविकता पर आधारित सामाजिक तुलना है। कभी व्यक्ति भौतिक वास्तविकता के आधार अपने व्यवहारों की तुलना करता है और अपने संबंध में कोई निर्णय करता है या कोई धारणा बनाता है, जैसे-एक व्यक्ति का विचार है कि वह जिस रास्ते से स्टेशन जाता है, उसकी दूरी उस रास्ते से कम है, जिससे होकर उसकी पत्नी स्टेशन जाती है। वह व्यक्ति दोनों के (2) रास्ते की दूरियों को अपनी मोटर की मीटर द्वारा माप कर बहुत आसानी से जान सकता है कि उसका विचार सही है या गलत है। यहां सामाजिक तुलना का आधार भौतिक वास्तविकता है।

लेकिन कभी व्यक्ति अपने विचार, मत या योग्यता का मूल्यांकन सामाजिक वास्तविकता के आधार पर करता है। सामाजिक वास्तविकता से तात्पर्य उस समझदारी से है कि दूसरे लोग सामान्यतः कैसे सोचते हैं या महसूस करते हैं, जैसे मनोविज्ञान का एक प्राध्यापक यह जानना चाहता कि मनोविज्ञान में उसकी योग्यता कितनी है। इसके लिए वह मनोविज्ञान के दूसरे प्राध्यापकों के विचारों के साथ